हमारे पास से चले जाओ, यीशु — दुष्टात्माएँ हमारे पास ही
रहने दो!

शालोम!
आपका स्वागत है जब हम मिलकर परमेश्वर के वचन पर मनन करें। आज हम उस कहानी पर ध्यान देंगे जिसमें यीशु कब्रों में रहने वाले एक दुष्टात्माओं से ग्रस्त व्यक्ति से मिलते हैं। हो सकता है आपने इसे पहले पढ़ा हो, पर मैं आपको फिर से पढ़ने को कहूँगा, क्योंकि परमेश्वर का वचन हर बार नया, जीवित और गहराई से भरा होता है।

भजन संहिता 12:6
“यहोवा की बातें शुद्ध बातें हैं, जैसे चांदी जो मिट्टी के भट्ठे में ताम्रकारों के द्वारा सात बार तायी गई हो।”

कृपया ध्यान दें — जिन भागों को बड़े अक्षरों में दिखाया गया है, वे गहरे आत्मिक और सिद्धांत संबंधी अर्थ लिए हुए हैं।

मरकुस 5:1–19 (हिंदी बाइबल – ओवी संस्करण)

1 तब वे झील के पार गेरासीनियों के देश में पहुंचे।
2 जब यीशु नाव पर से उतरा, तो एक मनुष्य, जो अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त था, कब्रों से निकल कर उससे मिला।
3 वह मनुष्य कब्रों में रहा करता था, और कोई उसे अब जंजीरों से भी नहीं बाँध सकता था।

हमारे पास से चले जाओ, यीशु — दुष्टात्माएँ हमारे पास ही
रहने दो!

4 क्योंकि वह बार-बार बेड़ियों और ज़ंजीरों से बाँधा गया था, लेकिन वह ज़ंजीरों को तोड़ डालता, और बेड़ियों को चूर-चूर कर देता था; और कोई उसे वश में नहीं कर सकता था।
5 वह रात-दिन कब्रों में और पहाड़ियों पर चिल्लाता और अपने को पत्थरों से घायल करता रहता था।
6 जब उसने यीशु को दूर से देखा, तो दौड़कर आया और उसे दण्डवत किया।
7 और ऊँचे स्वर से चिल्लाकर कहा, “हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझ से विनती करता हूँ, मुझे पीड़ा न दे!”
8 क्योंकि यीशु ने उससे कहा था, “हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल जा।”
9 फिर उसने उससे पूछा, “तेरा नाम क्या है?”
उसने उत्तर दिया, “मेरा नाम सेना है, क्योंकि हम बहुत हैं।” 10 और वे बारंबार यीशु से बिनती करने लगे कि उन्हें उस प्रदेश से बाहर न भेजे।
11 वहीं पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुंड चर रहा था।
12 और उन दुष्टात्माओं ने उससे बिनती करके कहा, “हमें उन सूअरों में भेज दे, कि हम उनमें प्रवेश करें।”
13 उसने उन्हें आज्ञा दी। तब वे आत्माएँ उस मनुष्य में से निकलकर सूअरों में समा गईं; और लगभग दो हजार का झुंड खड्ड की ढलान से भागा और झील में गिरकर डूब गया।
14 सूअर चरानेवाले भाग गए और नगर और गांवों में यह बात बताई। लोग यह देखने आए कि क्या हुआ है।
15 और वे यीशु के पास आए और उस मनुष्य को बैठे हुए, वस्त्र पहने हुए, और पूरे होश में देखा, जिससे दुष्टात्माएँ निकाली गई थीं — और वे डर गए।

हमारे पास से चले जाओ, यीशु — दुष्टात्माएँ हमारे पास ही
रहने दो!

16 देखनेवालों ने उन्हें बताया कि उस दुष्टात्माओं से ग्रस्त व्यक्ति का क्या हुआ और सूअरों का क्या हाल हुआ। 17 तब वे लोग यीशु से बिनती करने लगे कि वह उनके क्षेत्र से चला जाए।
18 जब वह नाव पर चढ़ रहा था, तब वह मनुष्य, जो पहले दुष्टात्माओं से पीड़ित था, उसके साथ रहने की विनती करने लगा।
19 परन्तु यीशु ने उसे अनुमति नहीं दी, बल्कि उससे कहा,
“अपने घर लौट जा और अपने लोगों को बता कि प्रभु ने तेरे लिए क्या बड़े काम किए हैं, और उस ने तुझ पर कैसी दया की है।”

आत्मिक और सिद्धांत की शिक्षाएँ

1. यीशु का अधिपत्य दुष्टात्माओं पर

दुष्टात्माएँ यीशु को पहचानती हैं और उसके सामने गिर पड़ती हैं। यह दर्शाता है कि यीशु को सम्पूर्ण आत्मिक जगत पर अधिकार प्राप्त है। वे अनुमति माँगते हैं — क्योंकि वे उसकी प्रभुता को स्वीकार करते हैं (मरकुस 5:7-8)।

2. दुष्टात्माओं का क्षेत्रीय प्रभाव

मरकुस 5:10
“और वे बार-बार यीशु से बिनती करने लगे कि उन्हें उस प्रदेश

हमारे पास से चले जाओ, यीशु — दुष्टात्माएँ हमारे पास ही
रहने दो!

से बाहर न भेजे।”

यह दर्शाता है कि दुष्टात्माएँ कुछ स्थानों पर अधिकार जमाकर बैठ जाती हैं — जैसे दानिय्येल 10:13 में स्वर्गदूत को फारस के अधिपति से युद्ध करना पड़ा।

इफिसियों 6:12
“क्योंकि हमारा संघर्ष रक्त और मांस से नहीं, परन्तु
प्रधानों, अधिकारों, इस अंधकारमय संसार के हाकिमों और
आकाशीय स्थानों में रहनेवाली दुष्ट आत्माओं से है।”

3. पाप और दुष्टता की विनाशकारी प्रकृति

वह व्यक्ति कब्रों में रहता था — मृत्यु, अलगाव और पीड़ा का प्रतीक। सूअरों का डूबना दिखाता है कि दुष्ट आत्माएँ जीवन को नष्ट करने के लिए आती हैं।

रोमियों 6:23
“क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का
वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।”

हमारे पास से चले जाओ, यीशु — दुष्टात्माएँ हमारे पास ही
रहने दो!

4. लोगों द्वारा यीशु को अस्वीकार करना

लोगों ने चमत्कार देखकर यीशु का स्वागत नहीं किया — वे डर गए और उसे क्षेत्र छोड़ने को कहा।

यूहन्ना 3:19
“न्याय यह है, कि ज्योति जगत में आई, और मनुष्यों ने ज्योति
से अधिक अंधकार को प्रेम किया, क्योंकि उनके काम बुरे थे।”

5. उद्धार पाए व्यक्ति की गवाही का उद्देश्य

मरकुस 5:19
“… जा, अपने लोगों को बता कि प्रभु ने तेरे साथ क्या बड़े काम किए हैं, और कैसे उस ने तुझ पर दया की।”

भजन संहिता 107:2
“यहोवा के छुड़ाए हुए ऐसा कहें…”

हमारे पास से चले जाओ, यीशु — दुष्टात्माएँ हमारे पास ही रहने दो!

प्रकाशितवाक्य 12:11
“वे मेम्ने के लहू और अपनी गवाही के वचन के द्वारा उस पर
जयवन्त हुए।”

निष्कर्ष

यह घटना हमें याद दिलाती है:

यीशु की अद्वितीय शक्ति और प्रभुता।
आत्मिक युद्ध वास्तविक है।
पाप और दुष्टता विनाशकारी हैं।
उद्धार हमें एक मिशन के साथ बुलाता है।

यूहन्ना 10:10
“चोर आता है केवल चुराने, घात करने और नष्ट करने के लिये; मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं।”

यदि आपने अभी तक मसीह को अपने जीवन में ग्रहण नहीं किया है, तो आज ही मन फिराओ और उसका अनुग्रह स्वीकार करो। यदि आप अभी तक बपतिस्मा नहीं लिए हैं, तो जल्दी करें — यह उसके साथ हमारी पहचान का प्रतीक है।

हमारे पास से चले जाओ, यीशु — दुष्टात्माएँ हमारे पास ही
रहने दो!

रोमियों 6:4
“इसलिये हम उसके साथ बपतिस्मा लेकर मृत्यु में दफनाए गए,
ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा से मृतकों में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नया जीवन व्यतीत करें।”

प्रभु आपको आशीर्वाद दे और आपकी रक्षा करे — आज और सदा के लिए।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp